International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2020, Submitted in October 2020, iajesm2014@gmail.com

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों का समायोजन

सुरेश चंद्र राठौड़, शोध छात्र, शिक्षा विभाग, ओपीजेएस विश्वविद्यालय, चुरू (राजस्थान)
डॉ. पूनम लता मिड्ढा, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, ओपीजेएस विश्वविद्यालय, चुरू (राजस्थान)

सार

इस शोध का प्राथमिक लक्ष्य यह निर्धारित करना है कि उच्च माध्यमिक शिक्षा में छात्रों के बीच शैक्षणिक सफलता और स्कूल समायोजन के बीच किस हद तक संबंध है, साथ ही पुरुष और महिला छात्रों, ग्रामीण छात्रों के बीच मौजूद प्रमुख असमानताओं की जांच करना है। शहरी क्षेत्रों, और कला और वैज्ञानिक धाराओं के छात्रों को उनके स्कूल समायोजन के संदर्भ में। इस अध्ययन को करने के लिए, शोधकर्ता ने एक शोध दृष्टिकोण का उपयोग किया जिसे वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान के रूप में जाना जाता है। पश्चिम बंगाल राज्य के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल एक हजार नौ सौ नौ छात्रों का एक नमूना चुनने के लिए मल्टीस्टेज क्लस्टर नमूना पद्धति का उपयोग किया गया था। अध्ययन में भाग लेने वाले व्यक्तियों से उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता द्वारा एक स्व-मानकीकृत समायोजन क्षमता सूची का उपयोग किया गया था। इस शोध के परिणामों से यह पता चला कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता और उनके नए स्कूल के माहौल में समायोजन के स्तर के बीच एक बड़ा विपरीत संबंध है। इसके अतिरिक्त, इस शोध के परिणामों से पता चला कि उच्च माध्यमिक विद्यालय के पुरुष और महिला विद्यार्थियों द्वारा अपने नए वातावरण के अनुकूल ढलने की डिग्री में उल्लेखनीय असमानता है।

प्रस्तावना

जीव वैज्ञानिक भौतिक परिस्थितियों के साथ समायोजन को अनुकूलन कहते हैं जबकि मनोवैज्ञानिक अपने वातावरण के साथ अनुकूलन को समायोजन कहते हैं। बालक अपने परिवार एवं विद्यालय में विभिन्न अंतः क्रिया करके, दूसरों के व्यवहार को देखकर समाज के के समक्ष अनेक प्रतिक्रियाएं करता है। उक्त प्रक्रियाओं, व्यवहार का, समाज के समक्ष प्रस्तुतीकरण समायोजन कहलाता है। समायोजन क्षमता एक जटिल मनोवैज्ञानिक प्रत्यय है तथा इसका विकास जीवन में धीरे-धीरे परन्तु निरन्तर होता है। यदि परिवार में प्रारंभिक बाल्यावस्था से कुछ बातों का विशेष ध्यान दिया जाये तो उच्च समायोजन क्षमता का विकास किया जा सकता है। गृह-वातावरण के साथ समायोजन क्षमता ऐसा प्रत्यय है जो बालक को उसकी वर्तमान चुनौतियों एवं कठिन परिस्थितियों के साथ उचित ढंग से संतुलन स्थापित करके कुशल और सफल जीवन जीने के लिये प्रेरणा स्रोत बनता है। परिवार के पश्चात विद्यालय ही ऐसा कारक है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक, नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अतः अभिभावकों के साथ-साथ शिक्षकों की विशेष जिम्मेदारी है कि किशोर विद्यार्थी के सामने ऐसे तथ्य, कारक, अनुभव, क्रियाएं, व्यवहार प्रस्तुत किए जाएं जिससे वे देश के भावी निर्माता बन सके। सिंघानियाँ (2010) ने शोधोंपरान्त पाया कि जब बालक घर से निकलकर विद्यालय पहुँचता है

साहित्य की समीक्षा

सिंह (2006) ने स्कूल के सामाजिक-भावनात्मक वातावरण के साथ-साथ विद्यार्थियों के समायोजन पर सेक्स के प्रभाव के साथ-साथ उनकी बातचीत के परिणामों की जांच के लिए

शोध किया। स्कूल के सामाजिक-भावनात्मक माहौल के विभिन्न स्तरों पर, लड़के अपने स्वास्थ्य से संबंधित परिस्थितियों के अनुकूल होने की क्षमता के मामले में महिलाओं की तुलना में बहुत बेहतर थे राजू और रहमतुल्ला (2007) के शोध का उद्देश्य स्कूली छात्रों की नए वातावरण के अनुकूल होने की क्षमता की जांच करना था। उन्होंने पाया कि स्कूली बच्चों का समायोजन ज्यादातर स्कूल की विशेषताओं पर निर्भर करता है, जैसे कि जिस कक्षा में वे नामांकित हैं, शिक्षा का माध्यम और स्कूल में किस तरह का प्रबंधन है वेलमुरुगन और बालाकृष्णन (2011) के निष्कर्षों के अनुसार, जिन्होंने लिंग और स्थान के संबंध में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के सामाजिक समायोजन और आत्म-अवधारणा के बीच संबंध की जांच की, उन्होंने पाया कि सामाजिक समायोजन लिंग या स्थान पर निर्भर नहीं है। . यह पता चला है कि सामाजिक समायोजन और आत्म-अवधारणा के बीच सहसंबंध गुणांक महत्वपूर्ण होने के करीब भी नहीं है मॉरीन और सहकर्मियों (2011) द्वारा स्कूल समायोजन और शैक्षणिक सफलता और लिंग के बीच संबंधों पर एक जांच की गई थी। इस जांच के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि स्कूल समायोजन के मामले में लड़कियों और लड़कों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था ,कौर (2012) ने उपलब्धि के स्तर, लिंग और भौगोलिक स्थिति के संबंध में समायोजन की कठिनाइयों पर शोध किया। उनके द्वारा पाया गया कि महिलाओं में समायोजन की क्षमता लड़कों की तुलना में अधिक होती है, हालाँकि स्थान का समायोजन शक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है , लिंग, पारिवारिक संरचना के प्रकार और स्कूल में शिक्षा के माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन की तुलना करते समय, बसु (2012) ने पाया कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन के बीच बहुत महत्वपूर्ण असमानताएँ हैं , बसु का शोध माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की तनावपूर्ण स्थितियों को संभालने की क्षमता की जांच करने के इरादे से किया गया था। रॉय और मित्रा (2012) द्वारा उन छात्रों के बीच समायोजन के एक पैटर्न की जांच की गई जो स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक और अंतिम किशोरावस्था में थे। शोध से पता चला कि शुरुआती किशोर और बाद के किशोर समूह परिवार, स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन से संबंधित समायोजन के क्षेत्रों के मामले में एक दूसरे से काफी भिन्न थे। लड़कियों की अनुकूलन करने की क्षमता लड़कों से बेहतर थी , उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रों जैसे घरेलू समायोजन, स्कूल समायोजन, भावनात्मक समायोजन आदि में समायोजन की तुलना करने के लिए पीरज़ादा (2013) द्वारा डिजाइन किए गए एक अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार, यह पता चला सामाजिक विज्ञान शिक्षकों में विज्ञान शिक्षकों की तुलना में समायोजन की समस्याएँ अधिक होती हैं।

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का समायोजन

मनोविज्ञान में, समायोजन उस व्यवहारिक प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा मनुष्य और अन्य जानवर अपनी विभिन्न आवश्यकताओं या अपनी आवश्यकताओं और अपने पर्यावरण की बाधाओं के बीच संतुलन बनाए रखते हैं। मनुष्य अन्य व्यक्तियों के साथ परस्पर निर्भरता से उत्पन्न होने वाली शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मांगों को समायोजित करने में सक्षम है। समायोजन, एक प्रक्रिया के रूप में, ऐसे समायोजन की गुणवत्ता या सफलता या विफलता के संदर्भ में इसके परिणाम के संदर्भ के बिना किसी व्यक्ति के स्वयं और उसके

पर्यावरण के अनुकूलन के तरीकों और साधनों का वर्णन और व्याख्या करता है। यह घर, स्कूल, कार्यस्थल पर बड़े होने और उम्र बढ़ने की जीवन स्थितियों में एक संगठनात्मक व्यवहार है। यह किसी को सहनीय स्तर पर बुनियादी आवेगों को दूर रखने, अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने और वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है। इस प्रकार, समायोजन बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक और व्यावसायिक आयामों के साथ स्व-आरंभित वृद्धि और विकास में मदद करता है। समायोजन उस मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को संदर्भित करता है

समायोजन की अवधारणा

समायोजन की अवधारणा सबसे पहले डार्विन ने दी थी जिन्होंने इसे भौतिक दुनिया में जीवित रहने के लिए एक अनुकूलन के रूप में इस्तेमाल किया था। मनुष्य अन्य व्यक्तियों के साथ परस्पर निर्भरता से उत्पन्न होने वाली शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मांगों को समायोजित करने में सक्षम है। समायोजन घर, स्कूल, कार्यस्थल, बड़े होने और उम्र बढ़ने की जीवन स्थितियों में एक संगठनात्मक व्यवहार है। यह व्यवहार का वह क्रम है, जिसका अनुसरण व्यक्ति आंतरिक, बाह्य और सामाजिक वातावरण की माँगों के संबंध में करता है। इस अध्ययन के लिए, समायोजन व्यक्ति और पर्यावरण के बीच समायोजन के तीन तीन क्षेत्रों - सामाजिक समायोजन, भावनात्मक समायोजन और शैक्षिक समायोजन के संबंध में एक संतोषजनक संबंध है।

मनोविज्ञान में समायोजन एक ऐसे व्यक्ति की स्थिति है जो अपने शारीरिक, व्यावसायिक और सामाजिक वातावरण में परिवर्तनों के अनुकूल होने में सक्षम है। दूसरे शब्दों में, समायोजन परस्पर विरोधी आवश्यकताओं, या पर्यावरण में बाधाओं द्वारा चुनौती दी गई आवश्यकताओं को संतुलित करने की व्यवहारिक प्रक्रिया को संदर्भित करता है।

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का समायोजन

समायोजन शब्द एक सतत प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने और पर्यावरण के बीच अधिक सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाने के लिए अपने व्यवहार में बदलाव करता है। समायोजन शब्द बहुत सख्त अर्थ में संतुलन के परिणामों को दर्शाता है, जो समायोजन या अनुकूलन से प्रभावित हो सकता है। व्यक्ति अपने भौतिक या सामाजिक परिवेश में कैसे साथ रहता है या कैसे जीवित रहता है, यह समायोजन पर निर्भर करता है। चूँकि पर्यावरण की स्थितियाँ लगातार बदलती रहती हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं को पर्यावरण के साथ संशोधित करने या समायोजित करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार समायोजन मनुष्य और पर्यावरण तथा उसके भौतिक या सामाजिक वातावरण में शामिल व्यक्तियों के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाए रखना है।

समायोजन बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ट्रॉट (1956) ने शैक्षणिक उपलब्धि को "स्कूल कार्यों में ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता या योग्यता की डिग्री के रूप में परिभाषित किया है जो आमतौर पर मानकीकृत परीक्षणों द्वारा मापा जाता है और विद्यार्थियों के प्रदर्शन के आधार पर ग्रेड या इकाइयों में व्यक्त किया जाता है"। जहां तक शैक्षणिक उपलब्धि का सवाल है, कई कारक इसे प्रभावित करते हैं। बच्चा घर, स्कूल, भावनाओं, वित्तीय मामलों और बदलती सामाजिक परिस्थितियों की अलग-अलग स्थितियों को कैसे अपनाता है, यह किसी की

शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव डाल सकता है।

सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच समायोजन

जीवित प्राणियों में मनुष्य में नई परिस्थितियों के अनुकूल ढलने की क्षमता सबसे अधिक होती है। सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य न केवल शारीरिक माँगों को स्वीकार करता है बल्कि वह समाज में सामाजिक दबावों को भी अपनाता है। समायोजन भौतिक वातावरण के साथ-साथ सामाजिक माँगों के प्रति अनुकूलन है। समायोजन की प्रक्रिया तब और जटिल हो जाती है जब एक स्थिति के साथ उसकी अंतःक्रिया दूसरी स्थिति की आवश्यकता से टकराती है। एक स्थिति आनंद का कारण बन सकती है जबकि दूसरी पीड़ा का कारण बन सकती है। इस प्रकार उत्पन्न तनाव मनुष्य को शारीरिक और मानसिक रूप से परेशान कर सकता है या असामान्य व्यवहार का कारण भी बन सकता है। जीवविज्ञानी अनुकूलन शब्द का प्रयोग सख्ती से पर्यावरण की भौतिक मांग के लिए करते हैं, लेकिन मनोवैज्ञानिक समायोजन शब्द का प्रयोग समाज में किसी व्यक्ति के सामाजिक या पारस्परिक संबंधों की बदलती स्थिति के लिए करते हैं। जहां तक शिक्षकों का सवाल है, उन्हें अपने काम के सामाजिक माहौल के प्रति अच्छी तरह से समायोजित होना चाहिए। उन्हें अपने करियर के दौरान आने वाली सभी प्रकार की परिस्थितियों से निपटने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षक को छात्रों, सहकर्मियों और शैक्षिक वातावरण के साथ तालमेल बिठाना होगा जहां उसे अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना है। ऐसे कई कारक हैं जो शिक्षकों के समायोजन को प्रभावित करते हैं।

शैक्षणिक उपलब्धि और +2 चरण समायोजन

समायोजन एक सतत और जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है और जीवन का अर्थ है भौतिक और सामाजिक वातावरण में होने वाले परिवर्तनों के साथ निरंतर समायोजन। जीवन भर व्यक्ति को ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जिसमें उसकी आवश्यकता की त्वरित और पूर्ण संतुष्टि संभव नहीं होती है। ये सभी स्थितियाँ समायोजन की मांग करती हैं। समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति शारीरिक और मनोवैज्ञानिक संतुलन बनाए रखता है और खुद को आत्म-विकास की ओर प्रेरित करता है और अपने पारस्परिक संबंधों के संबंध में किसी व्यक्ति के व्यवहार की गुणवत्ता का प्रतिनिधित्व करता है। साइमंड्स (1946) ने समायोजन को "पर्यावरण के साथ एक जीव का संतोषजनक संबंध" के रूप में परिभाषित किया। संतोषजनक संबंध शब्द का अर्थ वास्तविकता की मांग के अनुरूप अनुकूलन हो सकता है। इस प्रकार समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को उसकी आवश्यकताओं और उन्हें पूरा करने की क्षमता के बीच संतुलन बनाए रखते हुए एक खुशहाल और संतुष्ट जीवन जीने में मदद करती है।

छात्र व्यक्तित्व और उपलब्धि प्रेरणा समायोजन

पाषाण युग से परमाणु युग तक मानव जाति की प्रगति को देखना उल्लेखनीय है। चिकित्सा, मनोविज्ञान और अन्य वैज्ञानिक क्षेत्रों में अविश्वसनीय प्रगति हुई है। मनुष्य की सभी भौतिक विलासिताएँ उसे प्रगति के परिणामस्वरूप प्रदान की गई हैं। हालाँकि ये सभी उपाय लागू हैं, फिर भी संस्कृति में बेचैनी की भावना है। समाज में तेजी से हो रहे बदलावों के साथ तालमेल बिठाना हर उम्र के लोगों के लिए अधिक कठिन हो गया है। मनुष्य का विकास ही शिक्षा का

लक्ष्य है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारे जीवन के हर पहलू में व्याप्त है। शिक्षा का व्यापक उद्देश्य व्यक्ति को जीवन को प्रभावी ढंग से चलाने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करना है। शिक्षा प्राप्त करने से हमारे लिए अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों और कठिनाइयों पर विजय पाना संभव हो जाना चाहिए।

अनुसंधान की विधि:

संपूर्ण शोध में अवलोकन, योजना, पालन की जाने वाली प्रक्रिया, उसका विवरण और कुछ परिस्थितियों में क्या होता है उसका विश्लेषण जैसे तत्व शामिल होते हैं। वर्तमान अध्ययन के लिए, अन्वेषक ने मानक सर्वेक्षण विधि का चयन किया।

मानक सर्वेक्षण या वर्णनात्मक सर्वेक्षण

प्रस्तुत अध्ययन आरक्षित एवं सामान्य श्रेणी के संस्थानों में पढ़ने वाले इंटरमीडिएट छात्रों के समायोजन एवं व्यावसायिक रुचि के बारे में है। इसमें एक बड़ा नमूना शामिल है. इसलिए, अध्ययन करने के लिए मानक सर्वेक्षण सबसे उपयुक्त तरीका है।

सिधु.के.एस.,4 के अनुसार शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में जांचकर्ताओं द्वारा अपनाई जाने वाली सबसे आम विधि मानक या वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति है। यह वर्तमान में स्थितियों, प्रथाओं, प्रक्रियाओं, प्रवृत्तियों, प्रभावों, दृष्टिकोण, विश्वासों आदि के रूप में जो मौजूद है उसका वर्णन और व्याख्या करने का प्रयास करता है। यह किसी सामाजिक संस्था/समूह की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण, व्याख्या और रिपोर्ट करने का एक संगठित प्रयास है। क्षेत्र।

उपकरण का चयन:

यह अध्ययन आरक्षित और सामान्य श्रेणी के संस्थानों में पढ़ने वाले इंटरमीडिएट छात्रों के समायोजन और व्यावसायिक रुचि का सर्वेक्षण है। पिछले शोधकर्ताओं द्वारा मानकीकृत उपकरणों जैसे बेल की समायोजन सूची, सिन्हा और सिंह द्वारा समायोजन सूची, जलोटा की समायोजन सूची और सुधा.बी.जी., मैरी वनजा द्वारा समायोजन सूची, पारिख.जे.सी. द्वारा समायोजन समस्या सूची का उपयोग करके कई अध्ययन किए गए थे। और पटेल.एम.टी. गहन अध्ययन के बाद अन्वेषक ने 'समायोजन समस्या सूची' विकसित और मानकीकृत पारिख की मांग की। जे.सी. और पटेल. इंटरमीडिएट स्तर पर आरक्षित और गैर आरक्षित संस्थानों में पढ़ने वाले छात्रों के समायोजन और व्यावसायिक रुचि का पता लगाने के लिए एम.टी. समायोजन सूची या अनुसूचियों को अक्सर स्व-रिपोर्ट, ओपन एंडेड प्रश्नावली, समायोजन प्रश्नावली कहा जाता है।

डेटा का संग्रहण:

अन्वेषक ने निम्नलिखित तरीके से डेटा एकत्र किया, समायोजन समस्या सूची अंग्रेजी में थी। आरक्षित और गैर-आरक्षित संस्थानों में पढ़ने वाले कृष्णा (विजयवाड़ा) और गुंटूर जिलों के मध्यवर्ती छात्रों की सुविधा के लिए इसका तेलुगु में अनुवाद किया गया था। इस सूची का उपयोग करने से पहले, अन्वेषक ने घनिष्ठता विकसित की और सटीक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त करने के लिए विनम्रतापूर्वक उन्हें इस अध्ययन का उद्देश्य समझाया। एपीआई प्रशासन के निर्देशों का कड़ाई से पालन किया गया।

अन्वेषक ने उपकरण को प्रशासित करने में लगभग 6 महीने बिताए और आगे के अध्ययन के

लिए पर्याप्त और विश्वसनीय डेटा एकत्र किया जो व्याख्या करने में सहायक था। डेटा एकत्र करते समय, अन्वेषक को विभिन्न प्रकार के छात्र लोगों का सामना करना पड़ा, जिनके दृष्टिकोण, भावनात्मक स्थिति, उनके बारे में अनभिज्ञता थी। व्यावसायिक विकल्प आदि। कुछ संस्थानों के छात्रों, विशेषकर लड़कियों ने अन्वेषक द्वारा दी गई प्रश्नावली को भरने में भय और संदेह व्यक्त किया। दो से तीन प्रयासों के बाद, अन्वेषक छात्रों को आवश्यक कदम उठाने के लिए मना सका।

सांख्यिकीय डिज़ाइन:

जैसा कि डेटा के संग्रह में दिया गया है, आरक्षित और सामान्य श्रेणी में इंटरमीडिएट छात्रों की समायोजन समस्या का वर्तमान अध्ययन 1150 के नमूना आकार पर एपीआई (समायोजन और व्यावसायिक रुचि सूची) का उपयोग करके किया गया है, जिसमें से उपयोगी डेटा **1000** था। नमूने से एकत्र किए गए प्रासंगिक डेटा का उचित सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करके अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है। डेटा का विश्लेषण किया गया है, वर्गीकृत किया गया है और तीन चरणों में प्रस्तुत किया गया है,

आंकड़ों का विश्लेषण

इंटरमीडिएट विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त कुल समायोजन की डिग्री में कोई स्पष्ट अंतर नहीं है। इंटरमीडिएट विद्यार्थियों द्वारा साझा किए गए शैक्षिक समायोजन की डिग्री में कोई स्पष्ट अंतर नहीं है। इंटरमीडिएट स्तर पर छात्रों के बीच पारिवारिक समायोजन की डिग्री में कोई अंतर नहीं है। इंटरमीडिएट स्तर पर छात्रों के बीच व्यक्तिगत समायोजन की डिग्री एक दूसरे से भिन्न नहीं होती है। मध्यवर्ती स्तर पर विद्यार्थियों के बीच सामाजिक समायोजन की डिग्री एक दूसरे से भिन्न नहीं होती है। इंटरमीडिएट स्तर पर छात्रों के बीच व्यावसायिक समायोजन की डिग्री में कोई अंतर नहीं है।.

तालिका इंटरमीडिएट छात्रों के कुल और क्षेत्रवार समायोजन का प्रतिशत स्तर

आरक्षित नमूना (आर)-347							
समायोजन के क्षेत्र							
क्रमांक	समायोजन के स्तर	शिक्षात्मक	परिवार	निजी	सामाजिक	व्यवसायिक	कुल
1	बहुत संयुक्त राष्ट्र	0.1	0.5	2.6	0.6	0	0
2	संतोषजनक	2.5	7.5	25.6	9.5	3.3	2.2
3	संयुक्त राष्ट्र संतोषजनक	55.4	30.3	42.1	65.3	67.8	57.6
4	औसत	30.3	25	21.5	19.9	26	33.7
5	अच्छा	11.7	36.7	8.2	4.7	2.9	6.5

विश्लेषण को सरल बनाने के लिए, दो स्तर अर्थात् बहुत असंतोषजनक; असंतोषजनक को औसत से नीचे के रूप में वर्गीकृत किया गया है, आगे के उत्कृष्ट स्तर को स्तर 1 कहा जाता है और इसी तरह बाकी को घटते क्रम में रखा गया है जैसा कि पहले खंड में चर्चा की गई है।

औसत से कम	औसत	अच्छा	उत्कृष्ट
स्तर 4	स्तर 3	स्तर 2	स्तर 1

जैसा कि तालिका में देखा जा सकता है, जो छात्र इंटरमीडिएट स्तर पर हैं, उनका कुल समायोजन तदनुसार 6.5%, 33.7%, 57.6% और 2.2% है। यह स्तर 1, स्तर 2, स्तर 3 और स्तर **4** के क्षेत्र में है। कुल 11.7%, 30.3%, 55.4%, **और** 2.6% छात्र जिन्हें मध्यवर्ती छात्र माना जाता है, उन्होंने स्तर 1, 2, हासिल किया है। शैक्षिक समायोजन के क्षेत्र में क्रमशः 3, और 4। पारिवारिक समायोजन के क्षेत्र में इंटरमीडिएट के छात्रों का स्तर 1, 2, 3, और 4 था, जिसके अनुसार प्रतिशत 36.7%, 25%, 30.3% और **8%** था। जो छात्र इंटरमीडिएट स्तर पर हैं, उनके व्यक्तिगत समायोजन के क्षेत्र में स्तर 1, 2, 3 और 4 हैं, जिनका प्रतिशत क्रमशः 8.2%, 21.5%, 42.1% और 28.2% है। जब सामाजिक समायोजन की बात आती है, तो जो छात्र इंटरमीडिएट स्तर पर हैं, उनके स्तर 1, 2, 3, और **4** क्रमशः कुल 4.7%, 19.9%, 65.3% और **8.1%** हैं। जब व्यावसायिक समायोजन की बात आती है, तो जो छात्र इंटरमीडिएट स्तर पर हैं, उनके पास क्रमशः 2.9%, 26%, 67.8% और 3.3% की दर से स्तर 1, 2, 3 और 4 तक पहुंच होती है।

परिकल्पना :

आरक्षित संस्थानों में नामांकित इंटरमीडिएट छात्रों के न तो समग्र और न ही क्षेत्र-वार समायोजन स्तर एक दूसरे से महत्वपूर्ण रूप से भिन्न हैं।

आरक्षित संस्थानों में नामांकित इंटरमीडिएट छात्रों के बीच कुल समायोजन के स्तर के बीच अंतर करना संभव नहीं है। शैक्षिक समायोजन की डिग्री के संदर्भ में, आरक्षित संस्थानों में नामांकित मध्यवर्ती छात्र एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं। पारिवारिक समायोजन की डिग्री के संदर्भ में, आरक्षित संस्थानों में नामांकित इंटरमीडिएट छात्र एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं। आरक्षित संस्थानों में नामांकित इंटरमीडिएट छात्रों के बीच व्यक्तिगत समायोजन के स्तर के बीच अंतर करना संभव नहीं है। सामाजिक समायोजन की अपनी डिग्री के संदर्भ में, आरक्षित संस्थानों में नामांकित मध्यवर्ती छात्र एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं। आरक्षित संस्थानों में नामांकित इंटरमीडिएट छात्रों के बीच व्यावसायिक समायोजन की डिग्री में कोई स्पष्ट अंतर नहीं है।

सुझाव:

विश्वविद्यालय के शिक्षाविदों के समायोजन और व्यावसायिक रुचि को जानने के लिए विशेष रूप से एक अध्ययन आयोजित किया जा सकता है। ऑटिज़्म के संबंध में विशेष रूप से शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से विकलांग बच्चों के समायोजन और व्यावसायिक रुचि का पता लगाने के लिए अध्ययन को बढ़ाया जा सकता है। सेना के अधिकारियों के समायोजन और व्यावसायिक रुचि को जानने के लिए एक अध्ययन किया जा सकता है। आंध्र प्रदेश सामाजिक कल्याण आरक्षित शैक्षिक सोसायटी में पढ़ने वाले छात्रों के समायोजन और व्यावसायिक रुचि को जानने के लिए उसी शोध को विशेष रूप से बढ़ाया जा सकता है। आंध्र प्रदेश सामाजिक कल्याण आरक्षित शैक्षिक सोसायटी और आंध्र प्रदेश आरक्षित जूनियर कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों के समायोजन और व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए इसी तरह का अध्ययन किया जा सकता है।

निष्कर्ष :

करियर में उन्नति के लिए इंटरमीडिएट किसी के शैक्षिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण चरण है। जाहिर है, इस स्तर पर बच्चों को 'किशोर' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। मानव विकास की प्रक्रिया में किशोरावस्था एक कठिन अवस्था है। पारिवारिक, वित्तीय और सामाजिक स्थिति का बच्चे के व्यक्तिगत और शैक्षिक विकास पर प्रभाव पड़ेगा। इस समय, यह किशोर 'गंभीर तनाव' में है। अत्यधिक प्रतिस्पर्धी शिक्षा जगत में लक्ष्य प्राप्त करने के लिए इन छात्रों को विभिन्न पहलुओं में समायोजन करने की आवश्यकता है। यद्यपि कुल समायोजन का प्रतिशत स्तर औसत है, व्यक्तिगत समायोजन औसत से नीचे है। ऐसा लगता है कि किशोरों में व्यक्तिगत समायोजन की कमी है; इस क्षेत्र में अधिक ध्यान देने की जरूरत है.

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष:

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं।

इंटरमीडिएट के छात्रों के कुल और क्षेत्रवार समायोजन के स्तर में भिन्नता है। आरक्षित संस्थानों में पढ़ने वाले इंटरमीडिएट छात्रों के कुल और क्षेत्रवार समायोजन के स्तर में भिन्नता होती है। सामान्य श्रेणी के संस्थानों में पढ़ने वाले इंटरमीडिएट छात्रों के कुल और क्षेत्रवार समायोजन के स्तर में भिन्नता होती है। लिंग, स्कूल अध्ययन क्षेत्र और अध्ययन की धारा का इंटरमीडिएट छात्रों के कुल समायोजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इंटरमीडिएट छात्रों के शैक्षिक समायोजन पर छात्रों के रहने और शिक्षा के माध्यम का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। लिंग, स्कूल अध्ययन क्षेत्र, प्रबंधन का प्रकार और अध्ययन की धारा का इंटरमीडिएट छात्रों के पारिवारिक समायोजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इंटरमीडिएट छात्रों के व्यक्तिगत समायोजन पर लिंग और शिक्षा के माध्यम का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ :

1. मैथिली, बी., भारती, टी., नागरत्ना, बी. (2004)। किशोर छात्रों की समायोजन समस्याओं का एक अध्ययन जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च। 21(1), 54-61.
2. अल्पना सेन गुप्ता, शगुप्ता। (2007)। दृष्टिबाधित और सामान्य विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा और समायोजन पैटर्न का अध्ययन। प्राची जर्नल ऑफसाइको - सांस्कृतिक आयाम, 23(1), 14-18।
3. बेनीजी, एन. (1988)। स्कूल जाने वाले दृष्टिबाधित किशोरों के भावनात्मक समायोजन का एक अध्ययन। बुच में, एम.बी. (एड.), शिक्षा में अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण। 2, (पृ.1546). नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.
4. बरुआ कृष्णा, बरुआ जूरी.(2001). मातृ रोजगार के संबंध में किशोरों के समायोजन अंतर का एक अध्ययन भारतीय शैक्षिक सार, 1(3), 15।
5. बंकर, एल.एन. (2003)। किशोर अपराधियों और गैर-अपराधियों के बीच असुरक्षा की भावनाओं और समायोजन समस्याओं का एक अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन, 34(1), 40-42।
6. डॉस, एस.एच. (1980)। जन्म क्रम से संबंधित कुसमायोजन का एक अध्ययन। जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल रिसर्च, 24(3), 156-159।

7. गुप्ता, के.एम. (1978)। पारिवारिक, सामाजिक और भावनात्मक समायोजन में कारकों के रूप में आर्थिक स्थिति का अध्ययन। बुच में, एम.बी.(एड.), शिक्षा में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण। नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.
8. गुप्ता देवयानी. (1990)। लखनऊ शहर में किशोरों के समायोजन और उपलब्धि के संबंध में निराशा का एक अध्ययन। बुच में, एम.बी.(एड.), शिक्षा में अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण, 2, (पृ.1876)। नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.
9. जोसेफ अलेक्जेंडर, ई. (1998)। स्कूल जाने वाले किशोरों की समायोजन समस्याएँ। शिक्षा की प्रगति, 23(5), 107-110।
10. शिक्षा में अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण। 2, (पृ.913). नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.
11. कासिनाटब, एच.एम. (2000, जुलाई)। छात्रों के समायोजन और जवाहर नवोदय विद्यालयों के संगठनात्मक माहौल से उसके संबंध का अध्ययन। शिक्षा में खोज, 30-37.
12. कौर मंजीत, (1990)। विश्वविद्यालय अनुसंधान के समायोजन का एक अध्ययन। विद्वान अपने व्यक्तित्व, बुद्धिमत्ता, मूल्यों और एसईएस के संबंध में। बुच में, एम.बी.(एड.), शिक्षा में अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण, 2, (पृष्ठ 1219)। नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी. 1
13. कटियार, पी.सी. (1979)। स्कूली छात्रों की समायोजन समस्याओं का अध्ययन। बुच में, एम.बी.(एड.), शिक्षा में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण, नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.
9896801581 4 9896941581 4 SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY